दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB PRT, TGT & PGT
ROJGAR
WITH
ANKIT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
कहानी और कहानीकार
Part -2
LIVE
09-07-2024 09:00 AM

अज्ञेय

अज्ञेय की कहानियों में मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों तथा गूढ़ रहस्यों को परखने का प्रयत्न दिखाई देता हैं। उनकी कहानियों में बौद्धिकता, अनुभव की विशिष्टता और भाव प्रवणता मिलती हैं।

प्रमुख कहानी संग्रह - विपथगा (1937), परम्परा (1940), कोठरी की बात (1945), शरणार्थी (1948), जयदोल (1951), ये तेरे प्रतिरूप (1961), अमर वल्लरी (1945) ।

प्रमुख कहानियाँ — रोज, छोड़ा हुआ रास्ता, पगोडा वृक्ष, गैंग्रीन, आदि।

अज्ञेय की 'लेटरबॉक्स', 'शरणदाता'. 'बदला' कहानियाँ देश विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं।

अज्ञेय कृत 'रोज' नारी जीवन की एकरसता को मार्मिक ढंग से चित्रित करने वाली कहानी हैं।

इन कहानीकारों के अलावा मनोविश्लेषण प्रधान कहानी लिखने वाले भगवतीचरण वर्मा और भगवती प्रसाद वाजपेयी हैं।

वर्ष 1936 में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना के पश्चात् मार्क्सवादी प्रभाव से कहानी एक निश्चित यथार्थवादी धारा की ओर मुड़ती हैं। इसमें समाजवादी जीवन दृष्टि को लेकर यशपाल, राहुल सांकृत्यायन रांगेय राघव, प्रभाकर माचवे आदि ने कहानियाँ लिखकर आम आदमी के जीवन के प्रति संवेदना व्यक्त की है। इन कहानियों में अत्याचार, शोषण आर्थिक विषमता आदि को प्रस्तुत करते हुए सभी प्रकार के शोषण का स्वर बुलन्द किया है

यशपाल

मनोवैज्ञानिक धारा के साथ-साथ मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित जो अन्य कहानी धारा चली, इसके प्रवर्तक यशपाल हैं।

इन्हें विशुद्ध समाजवादी कहानीकार माना जाता हैं। यशपाल ने सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक अनेक प्रकार की कहानियाँ लिखीं।

प्रमुख कहानी संग्रह - पिंजरे की उड़ान (1939), ज्ञानदान (1943), अभिसप्त (1943), तर्क का तूफान (1944), भस्मावृत्त चिनगारी (1946), वो दुनिया (1948), फूलों का कुर्ता (1949), धर्मयुद्ध (1950), उत्तराधिकारी (1951), चित्र का शीर्षक (1951), उत्तमी की माँ (1955), तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ (1954), सच बोलने की भूल (1962), खच्चर और आदमी (1965), भूख के तीन दिन (1968)।

प्रमुख कहानी — मक्रील, शिवा पार्वती, दूसरी नाक, परदा, जबरदस्ती, बदनाम आदि कहानी संग्रह हैं।

यशपाल की कहानियों का पहला संग्रह 'पिंजरे की उड़ान' प्रकाशित हुआ। इसमें वर्ष 1934 से वर्ष 1938 के मध्य जेल में लिखी गई कहानियाँ संकलित हैं।

उपेन्द्रनाथ अश्क

उपेन्द्र नाथ अश्क समाजगत विषमताओं, मध्यवर्गीय जीवनगत, विसंगतियों, निम्नवर्गीय अभावग्रस्त जीवन संकटों का मार्मिक अंकन अपनी कहानियों में करते हैं।

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने अपनी कहानियों में मुख्य रूप से सामाजिक विकृतियों और कुरीतियों पर व्यंग्यात्मक शैली में प्रहार किया है।

प्रमुख कहानी संग्रह — पिंजरा (1944), अंकुर (1945), छींटे (1949), बैंगन का पौधा (1954), पलंग (1961), आकाशचारी (1966) नासूर, डाची एवं गोखरू ।

प्रमुख कहानियाँ – खाली डब्बा, एक उदासीन शाम, पिंजरा, मुक्त, देशभक्त, कांगड़ा का तेली, टेबुललैण्ड आदि ।

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर सामाजिक जीवन की समस्याओं को लेकर हर प्रकार की मानवीय पीड़ा से व्यथित होने वाले वादमुक्त कथाकार हैं। विष्णु प्रभाकर ने कहानियाँ वर्ष 1934 से लिखनी शुरू की स्नेहा नामक इनकी पहली कहानी थी।

प्रमुख कहानियाँ संग्रह - आदि और अंत (1945), रहमान का बेटा (1947), जिन्दगी के थपेड़े (1952), धरती अब भी घूम रही है (1970) साँचे और कला (1962), पुल टूटने से पहले (1977), मेरा वतन (1980), खिलौने (1981), एक और कुंती (1985) जिन्दगी एक रिहर्सल (1986), आसमान के नीचे (1989), कर्फ़्यू और आदमी (1994), आखिर क्यों (1998), मैं नारी हूँ (2001), जीवन का एक और नाम (2002), ईश्वर का चेहरा (2003) ।

नोट : अमृतलाल नागर का एकमात्र कहानी संग्रह 'एक दिल हजार अफसाने (1986) हैं।

प्रमुख कहानी संग्रह - जीवन के पहलू (1947), तिरंगे कफ़न (1948), इतिहास |

रांगेय राघव

रांगेय राघव की कहानियों में यथार्थवादी सामाजिक विचारधारा की प्रमुखता के साथ ही स्त्री-पुरूष सम्बन्धों को नए दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया हैं।

प्रमुख कहानी संग्रह — साम्राज्य का वैभव (1947), समुद्र के फेन (1947), देवदासी (1947), जीवन के दाने (1949), अधूरी मूरत (1949), अंगारे न बुझे (1951), इंसान पैदा हुआ (1951)।

रांगेय राघव की 'गदल' राजस्थानी परिवेश में प्रेम की निगूढ़ अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिन्दी की महत्त्वपूर्ण चर्चित कहानी हैं।

- **डॉ. शिवदान सिंह चौहान** ने 'गदल' को 'उसने कहा था' के बाद उसी स्तर की कहानी माना है।

- **इलाचन्द्र जोशी** को 'हिन्दी' में मनोवैज्ञानिक कहानी' लेखन परम्परा का प्रवर्तक माना जाता है।

हिन्दी के प्रमुख समकालीन कहानीकार

भीष्म साहनी - (1915-2003)

प्रमुख कहानी संग्रह : भाग्य रेखा (1953), पहला पाठ (1957), भटकती राख (1966), पटरियाँ (1973), वाड्.ण्यू संग्रह (1978), शोभायात्रा (1981), निशाचर (1983), पाली (1989), डायन (1998)

प्रमुख कहानियाँ – चीफ की दावत, अमृतसर आ गया, त्रास, ओ हरामजादे आदि ।

भीष्म साहनी प्रगतिशील जीवन दृष्टि के लिए प्रख्यात हैं।

सत्ता और व्यवस्था के खोखलेपन को साहनी जी ने सहजता और निर्भिकता से उधेड़ा हैं।

भीष्म साहनी की चीफ की दावत में उपेक्षिता और परिवार में कूड़ा-करकट की तरह छिपाई जाने वाली वृद्धा माँ का महत्त्व

अमरकांत

(1925-1972) अमरकांत मुख्य रूप से निम्न मध्यवर्ग के जीवन सन्दर्भों से अपनी कहानियों की सामग्री ली हैं।

कहानी संग्रह — जिन्दगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मिलन मित्र, कुहासा, एक धनी व्यक्ति का बयान (1997), सुख और दुःख का साथ (2002)।

प्रमुख कहानियाँ – जिन्दगी और जोंक, दोपहर का भोजन, डिप्टी कलेक्टरी, लोक परलोक आदि ।

अमरकांत की 'डिप्टी कलक्टर' कहानी में कहानी का पात्र डिप्टी कलक्टरी की परीक्षा देता है बेटा और आतुरता की धार पर वेदना सहता है पिता की पुत्र से आशाएँ, आकांक्षाएँ मानो अतीत की वर्तमान के प्रति शुभकामनाएँ हैं । सकलदीप बाबू की व्याग्रता और अधीरता की चेष्टा में मध्यवर्गीय समाज की रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, एकरसता और उन सबसे उबरने की मानसिकता है।

अमरकांत की कहानी 'हत्यारे' हिन्दी की सर्वोत्तम कहानियों में से एक है।

राजेन्द्र यादव

(1929-2013) राजेन्द्र यादव 'नयी कहानी' के प्रवर्तकों में हैं। राजेन्द्र यादव ने अपनी कहानियों में मध्य वर्ग के जीवन में बनते बिगड़ते जुड़ते- टूटते रिश्तों और उनसे उत्पन्न तनाव को महत्त्व दिया हैं।

प्रमुख कहानी संग्रह : देवताओं की मूर्तियों (1952), खेल खिलौने (1954), जहाँ लक्ष्मी कैद है (1957), अभिमन्यु की आत्महत्या (1959), छोटे-छोटे ताजमहल (1962), किनारे किनारे तक (1963), टूटना (1966), अपने पार (1968), ढोल और अन्य कहानियाँ (1972), हासिल तथा अन्य कहानियाँ (2006) |

प्रमुख अन्य कहानियाँ - अपने पार, अनुपस्थिति सम्बोधन, मेहमान आदि ।

कमलेश्वर

(1932-2007) कमलेश्वर 'नयी कहानी' के पुरोधाओं में से एक हैं। वर्ष 1972 में कमलेश्वर ने 'समांतर कहानी' आन्दोलन चलाया। कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में सामाजिक विसंगतियों, टूटते हुए जीवन मूल्यों, बढ़ते हुए भ्रष्टाचार और व्यक्ति के अमानवीकरण को वाणी देने का निरंतर प्रयत्न किया हैं। प्रमुख कहानी संग्रह - राजा निरबंसिया (1957), कस्बे का आदमी (1958), खोई हुई दिशाएँ (1963), मांस का दरिया (1966), बयान (1973), आजादी मुबारक (2002)।

प्रसिद्ध कहानियाँ — जार्ज पंचम की नाक, अपना एकांत, मानसरोवर के हंस, साँप, नीली झील, जोखिम, देवी की माँ, इतने अच्छे दिन आदि ।

कमलेश्वर की राजा निरबंसिया आज की विषम अर्थव्यवस्था सामाजिक और पारिवारिक विघटन, मूल्यों के प्रति अनास्था युवा पीढ़ी की कुंठा और आक्रोश को चित्रित करने वाली कहानी हैं।

धर्मवीर भारती

(1926-1997) धर्मवीर भारती आधुनिकता बोध के सूत्रों से बौद्धिक स्तर पर बखूबी परिचित है, किन्तु संवेदना के स्तर पर रोमानी संस्कारों से मुक्त नहीं हो सकें। उनकी कहानियों में निम्न मध्य वर्गीय जीवन की मानसिकता का अच्छा चित्रण मिलता है।

प्रमुख कहानी संग्रह - मुर्दों का गाँव (1946), स्वर्ग और पृथ्वी (1949), चाँद और टूटे हुए लोग (1955), बंद गली का आखिरी मकान (1969)।

प्रसिद्ध कहानी - गुल की बन्नों एवं सावित्री नं. 21

लक्ष्मी नारायण लाल

कहानी संग्रह - सूने आंगन रस बरसै (1960), नये स्वर नयी रेखाएँ (1962), एक बूँद जल (1964), एक और कहानी (1964), डाकू आए थे (1974)।

मोहन राकेश (1925-1972)

मोहन राकेश 'नयी कहानी' के प्रवर्तकों में से एक हैं। मोहन राकेश ने सम्बन्धों की यंत्रणा, महानगरीय जीवन की यांत्रिकता और उसके दबाव से व्यक्ति के अकेले पड़ते जाने की मानसिकता का चित्रण, व्यवस्था के खोखलेपन पर प्रहार और विभाजन की त्रासदी का चित्रण किया है।

कहानी संग्रह - इन्सान के खंडहर (1950), नये बादल (1957), जानवर और जानवर (1958), एक और जिन्दगी (1961), फौलाद का आकाश (1966), आज के साये (1967)।

प्रमुख कहानियाँ - मलबे का मालिक, आद्रा, मिस पाल, सेफ्टी पीन आदि ।

'मोहन राकेश' की कहानी 'एक ओर जिन्दगी' का नायक उद्विग्न है। उसे सहानुभूति की तलाश है। कारण यह है कि पत्नी उसकी उपेक्षा करती है, वह नौकरी करती है और आर्थिक रूप से स्वतंत्र है।

निर्मला वर्मा (1929-2005)

निर्मला वर्मा के पहले कहानी संग्रह परिन्दे (1960) को डॉ. नामवर सिंह ने नयी कहानी की पहली कृति माना हैं।

'परिन्दे' संग्रह की समीक्षा करते हुए नामवर सिंह ने कहा है "परिन्द" की लतिका की समस्या स्वतंत्रता या मुक्ति की समस्या हैं। अतीत से मुक्ति स्मृति से मुक्ति, उस चीज से मुक्ति जो हमें चलाए चलती है और अपने रेले में घसीट ले जाती है।"................सारी कहानी इस मुक्ति की पीड़ा की मार्मिक अभिव्यंजना है। .... मुक्ति का यह क्षण जिसमें मनुष्य स्वयं अपना साक्षी हो जाती है निर्मल की अनेक कहानियों का आलोक केन्द्र हैं।

कहानी संग्रह - जलती झाड़ी (1965), पिछली गर्मियों में (1968) बीच बहस में (1973), कव्वे और काला पानी (1983), सूखा तथा अन्य कहानियाँ (1995), परिन्दे (1960) ।

फणीश्वर नाथ रेणु (1921-1977)

रेणु 'नयी कहानी' के दौर में ग्राम - अंचल की विशिष्ट, ताजी और जीवंत अनुभूति लेकर आने वाले रचनाकारों में अन्यतम रहे हैं। कहानी संग्रह — ठुमरी (1959), आदिम रात्री की महक (1967), अग्निखोर (1973), एक श्रावणी दोपहर की धूप (1984), अच्छे आदमी (1986), रसप्रिया ।

'तीसरी कसम' में 40 वर्षीय ग्रामीण गाड़ीवान हिरामन और नर्तकी हीराबाई के परस्पर आकर्षण की कहानी हैं।

शिवप्रसाद सिंह (1928-1998)

इनका जन्म जमींदार परिवार में हुआ था। जिसका इन काफी प्रभाव था।

प्रमुख कहानी संग्रह - आर पार की माला (1955), कर्मनाशा की हार (1958), इन्हें भी इंतजार है (1961), मुर्दा सराय (1966), अंधेरा हँसता है (1975), भेड़िया (1977) ।

शिव प्रसाद सिंह की कहानी "खैरा पीपल कभी न डोले" में गाँव के यथार्थ स्वरूप, वहाँ की सांस्कृतिक, सामाजिक और प्राकृतिक स्थिति का बड़ा ही प्रभावशाली और मोहक चित्रण हुआ है।

रवीन्द्र कालिया (1938-2016)

नौ साल छोटी पत्नी (1969), काला रजिस्टर (1972), गरीबी हटाओ (1976), गली कूचे (1976), चकैया नीम (1979), बाँके लाल (1982), राग मिलावट मालकोष (1985), सत्ताइस साल की उमर तक (1987), जरा सी रोशनी (2002)

शैलेष मटियानी (1931–2001)

दो दुखों का एक सुख (1961), सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ (1966), हारा हुआ (1970), तीसरा सुख (1972), महाभोज (1975), चील (1976), कोहरा (1980) अहिंसा (1987), नाच जमूरे नाच (1989) नदी किनारे का गाँव (1992)।

रामदरश मिश्र (1924)

खाली घर (1969), एक वह (1974), दिनचर्या (1979), सर्पदंश (1982), बसंत का एक दिन (1982), अपने लिए (1992), आज का दिन भी (1996), एक कहानी लगातार (1997), फिर कब आयेंगे (1998), विदूषक (2002), स्वप्नभंग (2013)

शेखर जोशी (1932)

कहानी संग्रह - कोशी का घटवार (1958), साथ के लोग (1978), हलवाहा (1981), मेरा पहाड़ (1989), नौरंगी बीमार है (1990), डौगरी वाले (1904), बच्चे का सपना (2004) आदमी का डर (2011)

प्रमुख कहानियाँ – दाज्यू (1953), कोसी का घटवार (1958), समर्पण (1961), मृत्यु (1961), दौड़ (1965), रास्ते (1965), बदबू (1967) साथ के लोग (1967) आदि ।

शेखर जोशी नई कहानी आन्दोलन के चर्चित कथाकार हैं 'कोसी का घटवार' इनकी सर्वाधिक चर्चित लोकप्रिय कहानी हैं

'शेखर जोशी' की 'उस्ताद' औद्योगिक सन्दर्भ में मजदूरों के जीवन का चित्रण करने वाली कहानी है।

'शेखर जोशी' की 'तरू' का 'निर्णय' मध्यवर्गीय विसंगतियों पर केन्द्रित कहानी है।